JRLA, 3(9), September, 2026: 57-66

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

JOURNAL OF THE ROYAL LAUREATES ACADEMY

www.rlaindia.org

महाकवि भवभूति के नाटकों में स्त्री–स्वतंत्रताएवं सामाजिक चेतना

डॉ विशाखा बाजपेयी

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत , डॉ सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर(छ.ग.)

सारांश

महाकविभवभूति रचित नाटक महावीरचरितम्, मालतीमाधवम् और उत्तररामचरितम् सांस्कृतिक संसार की पृष्ठभूमि को दर्शाते हैं जिस संस्कृति में स्त्री का जीवन कुल, राज्य, विवाह एवं लोकमत से प्रभावित रहा हैं। भवभूति के नाटकों में समाज पितृसत्तात्मक अवश्य था, परन्तु उस समाज में इस व्यवस्था का प्रभाव स्त्री जीवन पर उनके स्वाभिमान एवं विचारशील होने पर नकारात्मक रूप में नहीं था। स्त्रियाँ समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी, वे पिता के निर्णय का सम्मान भी करती थी तथा उचित स्थानों पर अपने ज्ञान के अनुसार तर्क भी देती थी। प्रस्तुत शोध–पत्र में मुख्यतः भवभूति द्वारा नारी जीवन की करुणा, उनके अंतर्मन की इच्छा एवं तार्किकता के माध्यम से तत्कालीन नारियों की स्वतंत्रता एवं सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया हैं। महावीरचरितम् में स्त्री जीवन का वर्णन राजवंशीय राजनीतिक परिस्थितियों तक सीमित हैं, मालतीमाधवम् में मालती की स्वेच्छा, कामन्दकी की रणनीतिक प्रज्ञा, लवङ्गिका का प्रतिवाद और स्त्री–सहकार का विस्तृत तंत्र विवाह–संबंधी सत्ता को चुनौती देता है। उत्तररामचरितम् में सीता–परित्याग के माध्यम से लोकापवाद, राजधर्म और न्याय के अंतर्विरोध उद्घाटित होते हैं, इसके साथ ही आत्रेयी, वासन्ती, अरुन्धती, गङ्गा जैसी स्त्रियाँ ज्ञान, साक्ष्य और नैतिक प्राधिकार की वाहक बनती हैं। नाटकों के अध्ययन से यह प्रकट होता हैं कि ये मर्यादा से समाहित स्त्री की स्वतंत्रता को भी प्रदर्शित करते हैं।

मुख्य शब्द–भवभूति, स्त्री–स्वतंत्रता, सामाजिक चेतना, सीता, मालती, कामन्दकी, लोकापवाद।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

प्रस्तावना

महाकवि भवभूति संस्कृत नाट्य साहित्य में करुणा, सामाजिक चिंतन एवं नैतिक द्वन्द्व से समाहित अपनी नाट्य रचना के लिए विख्यात हैं। महाकवि भवभूति के कला पक्ष की यह मुख्य विशेषता हैं कि इनकी रचनाओं का आधार प्रसिद्ध कथाओं से प्रेरित रहा हैं परन्तु इन्होंने यथास्थिति परिवर्तन कर इनमे अपनी कवित्व शैली को प्रकाशित किया हैं। महाकवि भवभूति ने अपने नाटकों में मुख्य कथा का आधार अवश्य ऐतिहासिक ग्रंथो से लिया हैं, अपनी रचनाओं में इन्होंने अपने तर्क के आधार पर प्रसंगों को प्रस्तुत किया हैं जो इनकी कृतियों को नवीनतम स्वरुप प्रदान करते हैं। स्त्री जीवन को उन्होंने तत्कालीन कुल, राजवंश की स्थिति के आधार पर अपनी दृष्टि से प्रकशित किया हैं। वे अपने प्रश्नों कोनाटकीय उपस्थिति प्रदान कर इनके उत्तर जानने का प्रयास करते हैं। नारी जीवन में प्रेम तथा उनकी सहमति के लिए किये गए प्रयास को सकारात्मक स्वरुप प्रदान करते हैं, वे नारी जीवन के त्याग को करुणा के माध्यम से प्रकट करते हैं जो त्याग के द्वारा एक आदर्श नारी का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भवभूति के नाटकों में नारी का चरित्र केवल कुछ विशेषताओं तक ही सीमित नहीं हैं, ये मर्यादा में जीने वाली, विवाह में अपने योग्य वर की इच्छा करने वाली मानसिक स्वतंत्रता को प्रकट करने वाली, ज्ञान प्राप्त करने की इच्छुक एवं निर्णय लेने की क्षमता रखने वाली हैं।

भवभूति के तीनों नाटकों में स्त्री की स्थिति नाटकों की तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति से प्रेरित रही हैं। महावीरचरितम् का आधार राजनैतिक एवं वीरता से परिपूर्ण परिस्थिति हैं, यहाँ सीता की इच्छा के माध्यम से नारी के मत को प्रकाशित अवश्य किया गया हैं, परन्तु मुख्य कथा पुरुष के शौर्य एवं राजनैतिक क्रियाकलापों से सम्बद्ध हैं। मालतीमाधवम् में नारी जीवन के विषय को मालती की स्वेच्छा द्वारा प्रकाशित किया गया हैं, जो वर्तमान युग की दृष्टि से यह सामान्य माना जा सकता हैं परन्तु जिस युग में यह नाटक की रचना हुई तब यह एक नारी के साहस का परिचायक था। यह स्वेच्छा केवल युवती के जीवन से संबंधित नहीं थी यह उसके सामान्य जीवन के दीवारों से बाहर राजकीय आदेश से टकराव को दर्शाती हैं। उत्तररामचरितम् में नारी का जीवन व्यक्तिगत एवं राजनैतिक दोनों ही पक्ष में चित्रित किया गया हैं। यहाँ सीता के व्यक्तिगत जीवन का निर्णय उनके दाम्पत्य जीवन एवं राजनैतिक उत्तरदायित्वों के मध्य चित्रित किया गया हैं। हर नाटक में भवभूति समाज में स्त्रियों की एक सामान्य स्थिति से आगे बढ़ते हुए उनके पात्रों के चित्रण की सीमितता को स्त्री अनुभव की केन्द्रीयता की ओर अग्रसर होते हैं। यह एक सामान्य रचनात्मक प्रगति नहीं हैं अपितु तीनों नाटकों के अध्ययन के पश्चात् नारी संवेदना के प्रति भवभूति की एक संवेदनात्मक चिंतन का भाव हैं।

भवभूति की नाट्य रचना में स्त्री जीवन का चिंतन किये जाने के विषय में इसका अध्ययन आवश्यक हो जाता हैं कि भवभूति की नाट्य–सृष्टि स्त्री को निर्णयात्मक अधिकार देती हैं अथवा नहीं? स्त्री का जीवन कुल, परिवार, अनुशासन से किस सीमा तक प्रभावित रहा? स्त्री जीवन में मर्यादा एवं करुणा के साथ स्वेच्छा को भी सहानुभूति प्राप्त थी अथवा नहीं, वह अपने मत से तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक जीवन

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

को प्रभावित कर पाने में समर्थ थी, यह सभी प्रश्नों का उत्तर इन तीनों नाटकों में स्त्री पात्रों के पात्र चित्रण के माध्यम से स्पष्ट होता हैं, जिनका अध्ययन प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया हैं।

नारी जीवनः मर्यादा में समाहित स्वतंत्रता

प्राचीन नाट्य साहित्य में स्त्री की स्वतंत्रता को उनके द्वारा राज्य चलाने अथवा परिवार प्रमुख होने को ही नहीं माना जाता हैं। स्त्री की स्वतंत्रता का मूल्यांकन हर पक्ष, गतिविधि का सूक्ष्म अध्ययन हैं, जहाँ अपनी इच्छा को व्यक्त करना, सहमति अथवा असहमति को प्रकट करने के भाव को समझा जाता हैं। यह स्त्री के मर्यादित जीवन में स्वतंत्रता की परिभाषा को प्रस्तुत करते हैं। यह आवश्यक नहीं कि स्त्री के इच्छा व्यक्त करने पर निर्णय सदैव उनके पक्ष में ही हो, परन्तु उनके मत प्रकट करने की क्षमता उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रकाशित करती हैं। भवभूति इच्छा प्रकट करने तथा उसके पूर्ण होने के लिए समाज में व्याप्त परिस्थितयों को अपने नाटकों में दर्शाते हैं। स्त्री की स्वतंत्रता और उनकी मर्यादा, उनकी नैतिकता तथा सामाजिक जीवन को प्रकट करते हैं।

सामाजिक जीवन में विवाह एक अभिन्न अंग हैं, जो संस्कारों एवं संस्कृति को प्रकट करता हैं। भवभूति के नाटकों में विवाह राजकीय जीवन, उत्तराधिकार एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं। मालतीमाधवम् में मालती का विवाह के प्रति असहमति केवल अपने प्रेम के प्रति श्रद्धा नहीं हैं अपितु राजनीतिक आदेश के प्रति असहमति हैं। उत्तररामचरितम् सीता का परित्याग केवल उनके दाम्पत्य जीवन को प्रभावित करने तक सीमित नहीं हैं अपितु समाज में नारी जीवन पर लोकमत के प्रभाव को प्रस्तुत करता हैं। भवभूति मर्यादा में स्वतंत्रता को चित्रित करते हैं, वे परंपरा का प्रतिकार नहीं करते। वे उनके प्रभाव को प्रकाशित कर नारी का उसके प्रति संवेदनात्मक भाव को प्रकट करते हैं। वे मानवीय मूल्य प्रेम, करुणा, न्याय के आधार पर नारी जीवन में इच्छा, निर्णय क्षमता को दर्शाते हैं।

स्त्री स्वतंत्रता और उसकी मर्यादा के अध्ययन में करुणा को भवभूति ने आधार माना हैं। नारी जीवन में करुणा का वहीं स्थान हैं जो युद्धभूमि में वीरता का होता हैं। करुणा को भवभूति ने अश्रु– संचय तक ही सीमित नहीं रखा हैं, उन्होंने करुणा को नारी जीवन के सौन्दर्य के रूप में चित्रित किया हैं। मर्यादा का चित्रण कहीं मालती की विवशता तो कहीं सीता की अवमानना में प्रकट किया गया हैं। नारी जीवन में ऐसी बहुत सी परिस्थिति आती हैं जब वह सही होते हुए भी समाज, शासन, परिवार की आज्ञा के आगे झुक जाती हैं। भवभूति ने इस मर्यादा को लोकमत, पितृसत्तात्मक के द्वारा आलोचनात्मक रूप में प्रकट किया हैं, जहां लोकमत के कारण सीता के त्याग, मालती की इच्छा विरूद्ध पिता का राजाज्ञा के समक्ष झुक जाना नारी जीवन की मर्यादा को प्रस्तुत करता हैं।

महावीरचरितम्ः वीरकथा के साथ नारी जीवन की सीमित दृश्यता

महावीरचरित की कथा रामायण के आरंभिक भाग का वीर रस प्रधान नाटकीय रूप हैं। महावीरचरित में स्त्री

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

पात्र में सीता का पात्र मुख्य हैं। इनके साथ ही उर्मिला, शूर्पणखा, कैकेयी आदि का भी उल्लेख किया गया हैं। प्रथम अंक में सीता का उर्मिला के साथ विश्वामित्र के आश्रम में आगमन, वहाँ सीता का राम को देखना तथा उनके मन में अनुराग के उदय का सुंदर प्रस्तुतिकरण किया गया हैं। सीता के राम के प्रति अनुराग अत्यंत सम्मानजनक रूप से जनक, विश्वामित्र की उपस्थिति में विवाह में परिणित कर इसे सामाजिक रूप प्रदान किया जाता हैं। यहाँ सीता की इच्छा के सम्मान को अवश्य प्रस्तुत किया गया हैं, परन्तु उनकी इच्छा को ही निर्णायक नहीं माना गया हैं। उनकी इच्छा का पूर्ण होना, उसे विवाह संस्कार द्वारा सम्माननीय रूप प्रदान करने का निर्णय पिता जनक द्वारा ही लिया जाता हैं। यहाँ स्त्री की स्वतंत्रता इच्छा प्रकट करने के भाव से प्रस्तुत होता हैं, परन्तु निर्णय लेने के अधिकार द्वारा मर्यादा को भी प्रस्तुत किया गया है।

स्त्री को राजवंशों के मध्य गौरव एवं सत्ता के संघर्ष का भी केंद्र तत्कालीन स्थिति के आधार पर माना गया हैं। स्त्री को विवाह द्वारा राजनीति के एक भाग के रूप में स्वीकार किया जाता था। महावीरचरितम् में एक ओर सीता का राम के प्रति अनुराग का वर्णन हैं तो दूसरी और रावण के दूत द्वारा सीता के लिए विवाह के प्रस्ताव को वर्णित किया गया हैं। सीता की स्वीकृति–अस्वीकृति से ज्यादा महत्त्व वीर पुरुषों की वीरता को दिया जाता हैं।

स्त्री पात्रों के स्वभाव आदि का वर्णन शूर्पणखा तथा कैकयी के माध्यम से राम वनगमन के विषय में चतुर्थ अंक में प्रस्तुत किया गया हैं। रामायण आदि रामकथा से सम्बध्द ग्रंथों में मंथरा की बात में आकर कैकयी द्वारा राम को वनवास देने के हठ का वर्णन हैं, भवभूति ने इसे माल्यवान के षड्यंत्र के द्वारा एक दूसरा रूप प्रदान किया हैं। चतुर्थ अंक में माल्यवान द्वारा षड्यंत्रपूर्वक शूर्पणखा का मंथरा के शरीर में प्रवेश कराया जाता हैं तथा वह कैकयी के नाम से कृत्रिम पत्र प्रस्तुत करती हैं।

मध्यमायाः प्रियसखी मातुर्नो मन्थरेति या।
सा प्राप्तेयमयोध्यायास्तव राम दिदृक्षया।1।

इस षड्यंत्र के बाद राम का वनगमन दर्शाया गया हैं। इस परिवर्तन के माध्यम कैकयी को प्रचलित स्वार्थी मातृत्व के दोष से मुक्ति प्राप्त हो जाती हैं, साथ ही स्त्री के स्वभाव में कटुता, स्वार्थी भाव कोप्रस्तुत कर राजनैतिक षड्यंत्रों को पूर्ण किया जाता हैं। कैकयी के स्वार्थ को षड्यंत्र क्रिया द्वारा प्रकाशित कर शूर्पणखा पर आरोपित किया जाता हैं। यहाँ भवभूति द्वारा कैकयी के स्त्री जीवन की करुणा, मातृत्व प्रेम को जीवंत रखने का प्रयास किया गया हैं। नारी का माता के रूप में सम्मानीय होने की छवि राम द्वारा कैकेयी की इच्छा पूर्ति को प्राथमिकता देकर पिता को भी मनाने का वर्णन हैं–

येऽसौ वरद्वयन्यासस्तं माता मेऽद्य मध्यमा।
यथेष्टं नाथते तात तत्प्रसादाथिनो वयम्।।2।।

यहां राम द्वारा स्वयं वनवास ग्रहण करने का अनुग्रह अपनी माता कैकेयी की इच्छा पूर्ण करने हेतु कर रहे हैं। यहां एक ओर माता के प्रति उनकी श्रद्धा तथा दूसरी ओर नारी की इच्छा को सर्वोपरि रखने से उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रकाशित किया गया है। महावीरचरितम् में सीता मुख्य नारी पात्र हैं, जिसकी

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

करुणा, प्रेम की प्रतिमूर्ति के रूप में नारी जीवन की उज्जवलता को प्रकट किया हैं, पर उनकी स्वतंत्र वाणी की परिधि अत्यंत सूक्ष्म हैं। यह नाटक मुख्य रूप से राजनैतिक कूटनीति, युद्ध, माल्यवान के षड्यंत्र पर केन्द्रित है। यहाँ भवभूति ने स्त्री की इच्छा को प्रकट अवश्य किया हैं पर वह भी सामाजिक संरचना के अंतर्भूत चित्रित किया गया हैं। अतः महावीरचरितम् स्त्री जीवन की स्वतंत्रता का आदर्श उदाहरण नहीं, बल्कि तुलनात्मक आधार है।

मालतीमाधवम्: स्त्री की इच्छा, सहमति एवं प्रतिकार

मालतीमाधवम् का मुख्य कथानक प्रेम पर आधारित हैं, साथ ही यह कथा निजी इच्छा तथा सार्वजानिक सत्ता के मध्य हैं। इस कथा में पद्मावती के अमात्य भूरिवसु की पुत्री मालती, माधव से प्रेम करती है। यह प्रेम कथा संघर्ष से तब गुजरती हैं जब राजा मालती का विवाह नंदन से कराना चाहता हैं। यहाँ से स्त्री जीवन की स्वतंत्रता का पक्ष आरम्भ होता हैं जब मालती के पिता राजकीय अनुग्रह एवं मालती की इच्छा के मध्य संघर्ष करता हैं। मालती अपनी इस स्थिति को तीक्ष्ण व्यंग्य के द्वारा व्यक्त करती हैं–

राजाराधनं खलु तातस्य गुरुकम्, न पुनर्मालती।3।

यहाँ अर्थ स्पष्ट हैं कि पिता के लिए राजा को प्रसन्न रखना मालती की प्रसन्नता से अधिक कीमती हैं। यह वाक्य स्वयं में सामाजिक आलोचना को समाहित किये हुए हैं। यहाँ मालती पुत्री के रूप में यह अनुभव करती हैं कि परिवार उसे उत्तरदायित्व से अधिक राजकीय सम्बन्ध की विषय वस्तु के रूप में मानता हैं। वे इस परिस्थिति में भी रोने की जगह पिता की इस निर्णय क्षमता की कमी को दरबारी व्यवस्था को उद्घाटित करती हैं जहाँ राजा अधिकारी के मध्य संबंधों की प्रतिष्ठा स्त्री के विवाह से निर्धारित होता हैं। मालती की इस पराधीनता के प्रति बौद्धिक पहचान के द्वारा भवभूति स्त्री स्वतंत्रता को प्रस्तुत करते हैं।

यह नाटक मुख्यतः प्रेम कथा पर आधारित हैं, यहाँ मालती का प्रेम एक आकर्षण ही नहीं हैं। मालती के हृदय में इस प्रेम के साथ लज्जा, इच्छा, कर्तव्य भी समाहित थी, इसलिए यह प्रेम कथा केवल आकर्षणमात्र का विषय नहीं हैं। वह अपने प्रेम माधव का चयन अवश्य करती हैं, परन्तु सामाजिक परिस्थितियों की कारण वे इसे सार्वजानिक रूप से प्रकट नहीं कर पाती। वह माधव से प्रेम अवश्य करती है, पर वह अपनी मर्यादा तथा माता– पिता के सम्मान का भी ध्यान रखती है–

ज्वलतु गगने रात्रौ रात्रावखण्डकलः शशी
दहतु मदनः किं वा मृत्योः परेण विधास्यतः।
मम तु दयितः श्लाघ्यस्तातो जनन्यमलान्वया
कुलमालिनं न त्वेवायं जनो न च जीवितम्।।4।।

प्रेम एवं कर्तव्य के इस असमंजस की स्थिति में बौद्ध परिव्राजिका कामन्दकी का प्रवेश होता हैं। कामन्दकी के माध्यम से स्त्री के शिक्षित व राजनैतिक ज्ञान के कारण स्त्री के मर्यादित जीवन में समाहित स्वतंत्रता को

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

प्रकट होता हैं। वे भूरिवसु और देवरात के पुराने संकल्प को जानती हैं, जिससे वह प्रेम व पिता की निर्णायक क्षमता को प्रकाशित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं–

राज्ञः प्रियाय सुहृदे सचिवाय कार्या–

दत्वात्मजां भवतु निर्वृतिमानमात्यः।

दुर्दर्शनेन घटतामियमप्यनेन

धूमग्रहेण विमला शशिनः कलेव।5।

पुत्री के जीवन में पिता एवं भाग्य का अधिकार होता हैं। कामन्दकी इसे सामान्यतः स्वीकार न कर, मालती को उसकी इच्छा पूर्ण करने में सहयोग दिलाने का पूरा प्रयास करती हैं। वह इस विषय में विद्रोह नहीं करती, वे तत्कालीन सामाजिक प्रसंगों, मित्रता का उदाहरण देकर मालती का सहयोग करती हैं। यहाँ भवभूति स्त्री जीवन की स्वतंत्रता को वीर भाव अथवा विद्रोह के रूप में नहीं अपितु स्त्रियों के ज्ञान संयोजन एवं उनके परस्पर सहयोग के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कामन्दकी के साथ अवलोकिता, लवङ्गिका, बुद्धरक्षिता और सौदामिनी स्त्री–सहकार की भावना को प्रकाशित कर अपनी भूमिका निभाती हैं। वे अपनी विभिन्न कार्यों संदेश पहुचाने, मनोभाव को समझने तथा संकट में निर्णय लेने की क्षमता द्वारा स्त्री स्वतंत्रता के एक भिन्न रूप को प्रकाशित करती हैं। पुरुष नायक अपने शौर्य का प्रदर्शन अवश्य करते हैं परन्तु नारियों की यह गुण सामाजिक एवं बौद्धिक क्षमता उन्हें पृथक पहचान प्रदान करते हैं। सभी स्त्री पात्र कथा में अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करती हैं। मालती की सखी लवङ्गिका उनकी चुप्पी को समझती हैं और दबाव में जीने की अपेक्षा उसके इस स्थिति को वाणी प्रदान करती हैं। सौदामिनी अपनी साधना एवं असाधारण क्षमता के द्वारा संकट के समाधान में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करती हैं। इस नाटक में स्त्रियाँ केवल नायिका के रूप में नहीं अपितु वैकल्पिक सामाजिक अवसंरचना हैं, जिनकी आपसी सहयोग के बिना मालती का इच्छित विवाह संभव नहीं हैं।

कथा में मदयन्तिका का प्रसंग चयन की एक दूसरी छवि प्रस्तुत करता हैं। मकरंद जब मदयन्तिका को संकट से बचाता हैं, वहां से प्रेम कृतज्ञता और आकर्षण के साथ प्रस्फुटित होता हैं। यहाँ भी स्त्री सहकारिता प्रकट होती हैं, बुद्धरक्षिता इस विषय में अपनी बौद्धिक क्षमता द्वारा इस प्रसंग को संभालती हैं। इसके साथ ही इस नाटक में प्रेम के विषय में पुरुष वर्ग प्रेम को विजय का प्रकरण बनने से बचाताहैं। यहाँ बचाव करने वाला पुरुष हैं और सुरक्षित होने वाली स्त्री का चित्रण किया गया हैं। इसी प्रकार मालती को अघोरघण्ट और कपालकुण्डला से माधव बचाता है। यहाँ पुरुष वर्ग द्वारा सुरक्षा के भाव से स्त्री की इच्छा को नैतिक वैधता प्राप्त हो जाती हैं।

नाटक में अंतिम परिणाम विवाह हैं। इस नाटक में प्रेम को विजय माना हैं, विवाह संस्था का अतिक्रमण नहीं माना जाता। मालती पिता एवं राजा की इच्छा को मानने को तैयार होती हैं, परन्तु केवल उनकी इच्छा नहीं विवाह को सामाजिक स्वीकृति होना जरुरी हैं। व्यवस्था की प्रतिज्ञाओं, मित्रताओं और नैतिक भाषा को मोड़कर स्त्री की स्वेच्छा के अनुकूल करता है। इसकी सीमा वास्तविक है।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

उत्तररामचरितम्ः लोकोपवाद, स्त्री का नैतिक अधिकार एवं न्याय

भवभूति की तीनों कृतियों में उत्तररामचरितम् में स्त्री स्वतंत्रता का विषय सार्वजानिक स्वरुप ग्रहण करता हैं। इस नाटक में सीता को स्त्री स्वतंत्रता एवं मर्यादा की परिधि में जीवन वाली नारी हैं। राम अपनी अर्धांगिनी सीता की पवित्रता एवं सद्‌गुणों को भलीभांति जानते हैं, फिर भी लोकापवाद के कारण उनका परित्याग करते हैं। राम की व्यथा को शब्दों के माध्यम से प्रथम अंक में प्रस्तुत किया गया हैं–

स्नेहं दया च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।6।।

राम कहते हैं कि प्रजा की सेवा के लिए स्नेह, दया, सुख, यहाँ तक सीता को भी त्यागने में उन्हें व्यथा नहीं हैं। यहाँ लोक की आराधना हेतु किये गए त्याग के असहनीय शोक को 'नास्ति मे व्यथा' को आत्म–अनुशासन को प्रकट करता हैं। यहाँ स्त्री वर्ग की व्यथा को सीता की स्थिति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया हैं कि वह राजधर्म के लिए त्याग दी जाने वाली वस्तु हैं। यहाँ राम राजा के रूप में राजधर्म का पालन पत्नी के त्याग के माध्यम से करते हैं, परन्तु उस त्याग का वास्तविक दुःख सीता अनुभव करती हैं। स्त्री स्वतंत्रता के लिए पितृसत्तात्मक राज्य एक नैतिक विषमता हैं। इस निर्णय के अन्तर्विरोध को प्रकट किया गया हैं–

उत्पत्तिपरिपूतायाः किमास्याः पावनान्तरैः।
तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमहर्तः।।7।।

राम स्वीकार करते हैं कि सीता जन्म से पवित्र हैं उन्हें किसी प्रकार की शुद्धि की आवश्यकता नहीं हैं। यहाँ सीता के प्रति अन्याय अज्ञानतावश नहीं अपितु लोकमत के समक्ष नैतिकता से हैं। यहाँ राम के सीता के प्रति करुणा एवं विश्वास को भवभूति स्त्री स्वतंत्रता के एक रूप की भांति प्रकट करते हैं। जहाँ पारिवारिक जीवन में वह स्वतंत्र हैं सभी उस पर विश्वास करते हैं। यहाँ भवभूति सीता के परित्याग के लिए राम को अपराधबोध से युक्त दिखाते हैं, जो सीता के परित्याग को अत्यंत करुणा के भाव से देखते हैं। यहाँ पाठक राजधर्म के आदेश में राम की विवशता तथा सीता के त्याग का अनुभव करते हैं। यहाँ केवल लोकमत को आधार मानकर सीता का त्याग कर दिया गया, वहां किसी विधिवत सुनवाई का कोई प्रावधान नहीं था। सीता को न हीं उनका उनका आरोप बताया गया, न ही अपनी बात कहने का अवसर दिया गया। इस विधि की आलोचना नाटक में अन्य पात्रों के द्वारा अवश्य प्रस्तुत की गयी हैं, नारी के स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाले कारणों की आलोचना मुखर स्वर में करते हैं। इस विषय पर वासंती अत्यंत निर्भीकता से इस आदेश की आलोचना करती हैं। वह वनदेवता हैं, साथ ही सीता की सखी भी हैं। सीता के प्रति उसकी सहानुभूति को वह राम से प्रश्न माध्यम में प्रस्तुत करती हैं–

अयि कठोर यशः किल ते प्रियं, किमयशो ननु घोरमतः परम्।
किमभवद्विपिने हरिणीदृशः कथय नाथ कथं बत मन्यसे।।8।।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

वासंती राम को उनके प्रिय यश पर प्रश्न करती हैं कि इससे अधिक अपयश क्या ही होगा। यह राजसत्ता के सामने उसकी सखी के प्रति किया गया अन्याय हैं। वासंती का स्थान वन हैं वह किसी राजमर्यादा से नहीं बंधी हैं। इस कारण उसकी वाणी सार्वजनिक विवेक की भांति हैं। वे केवल एक भावुक सखी नहीं अपितु यश की पुरुष परिभाषा को चुनौती देने वाली निर्भीक स्त्री हैं। जो यश अपनी निर्दोष पत्नी के परित्यग से बचे, वह यश तो स्वयं में अपयश हैं। यहाँ वासंती को स्त्री स्वातन्त्र्य का एक उदाहरण माना जा सकता हैं, जो सखी के प्रति किये अन्याय के प्रति बोलने में स्वतंत्र हैं।

नाटक में स्त्री के बौद्धिक स्वतंत्रता का विशिष्ट उदाहरण आत्रेयी हैं, जो वाल्मीकि आश्रम को शिक्षर्थिनी हैं एवं ज्ञान की खोज में अगस्त्य आश्रम आती हैं–

अस्मिन्नगस्त्यप्रमुखाः प्रदेशे भूयांश उद्गीथविदो वसन्ति।
तेभ्योधिगन्तुं निगमान्तविद्यां वाल्मीकिपार्श्वादिह पर्यटामि।।9।।

आत्रेयी कहती है कि इस प्रदेश में अगस्त्य आदि उद्गीथविद् रहते हैं, उनसे निगमान्त–विद्या ग्रहण करने के लिए वह वाल्मीकि के चरणों से यहाँ तक भ्रमण कर रही है। यह दृश्य स्त्री को आश्रम सेवा की सीमा में नहीं रखता वह आत्रेयी को गुरु परंपरा में अध्ययन करने वाली विद्यार्थी हैं। यह ज्ञान के स्त्री द्वारा अन्वेषण का सुंदर उदारहण हैं, यह स्त्री स्वतंत्रता का एक अलग रूप प्रस्तुत करता हैं। जो उसकी बौद्धिक क्षमता के माध्यम से उसे स्वतंत्र बनता हैं। भवभूति के नाटकों में मालती की स्वेच्छा को आत्रेयी की विद्वता के द्वारा शैक्षिक गतिशीलता से जोडती हैं।

स्त्री स्वतंत्रता का विस्तार नाटक के अंतिम भाग में प्रस्तुत होता हैं, जहाँ अरुंधती, पृथ्वी, गंगा सीता की गरिमा की रक्षा हेतु सहायक बनती हैं। स्त्री सहकारिता, उनकी स्वतंत्रता का सुंदर उदाहरण होता हैं, जो सीता के पक्ष में इन पात्रों के माध्यम से प्रकट होता हैं। यहाँ पृथ्वी जन्म, गंगा संरक्षण तथा अरुंधती दाम्पत्य धर्म को वैधता दे कर पुरुष राज्य से बाहर स्थापित नैतिक प्राधिकार लाती हैं।

भवभूति ने सीता की करुणामयी स्थिति को नारी जीवन की विवशता के रूप में स्थापित होने से बचने के लिए वासंती, आत्रेयी, जैसी नारी शक्तियों को भी स्थान दिया हैं। जो पुरुष वर्ग के निर्णय को भी अपनी बौद्धिक क्षमता से असहमति दर्शाती हैं, अपने ज्ञान से नारी जीवन में विद्वता का संचार करती हैं। स्त्री वाणी के इन्हीं स्वरूपों के माध्यम से यह नाटक केवल राम के विरह की कथा नहीं अपितु न्याय से वंचित सीता की सामाजिक पुनरुपस्थिति की कथा बन जाती हैं।

तुलनात्मक अध्ययनः उपलब्धियां एवं अन्तर्विरोध

भवभूति रचित तीनों नाटकों पर स्त्री स्वतंत्रता के तीन स्तर प्रस्तुत होते हैं। महावीरचरितम् में स्त्री की इच्छा को पहचान लिया जाता हैं, पर राजनैतिक संरचना इसे गौण रखती हैं। मालतीमाधवम् में स्त्री की इच्छा कथानक का मुख्य केंद्र बनती हैं। उसकी इच्छा को निर्णय में परिणित कराने में उसकी सखियां भी सहयोग करती हैं। यह सहमति, विश्वास तथा अपमान की स्थितियों को प्रस्तुत करता हैं। उत्तररामचरितम् में

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

विवाह से दंपती जीवन सामाजिक मत तक हो कर गुजरता हैं। इस नाटक में आत्रेयी ज्ञान, वासंती प्रतिवाद एवं अरुंधती सार्वजनिक प्रमाण की सत्ता धारण करती हैं।

इन नाटकों की सबसे मुख्य विशेषता हैं कि ये स्त्री की अनुभूति को महत्त्व देना हैं। मालती जानती है कि उसके पिता उसे राजा से कम महत्त्व दे रहे हैं, लवङ्गिका को यह पता हैं कि अपमान में मन आजीवन शल्य की भांति रहता हैं। सीता राम के प्रेम को समझती हैं, वासंती प्रेम को अन्याय करने का अधिकार नहीं मानती। आत्रेयी जानती हैं कि ज्ञानार्जन के लिए यात्रा आवश्यक हैं। इन स्त्री ज्ञान को संबद्ध करने पर सामाजिक चेतन का समृद्ध स्वरूप बनाता हैं। यह संरचना अनुभव, मैत्री, करूणा से निर्मित हैं। यहाँ विवाह अत्यंत सम्मानजनक स्थिति में स्वीकार किये गए हैं, यहाँ प्रेम का लक्ष्य विवाह हैं। मातृत्व और पवित्रता नारी जीवन के मूल्य हैं, साथ ही उन्हे परिवार, कुल एवं राजा से सहमति आवश्यक हैं। यह नारी जीवन के विभिन्न स्वरूप को प्रदर्शित करते हैं।

उपसंहार

भवभूति के नाटकों में स्त्री स्वतंत्रता एकरूप में हैं, यह स्त्री जीवन की सामाजिक, बौद्धिक एवं मानसिक स्थिति को दर्शाता हैं। इन नाटकों में स्वतंत्रता का आरंभ इच्छा से होता हैं, जो सखी की समझ, शिक्षित स्त्री के ज्ञान एवं स्त्री के निर्भीक सहयोग में विस्तृत होता हैं। मालती के एक व्यंग्य वाक्य से विवाह की राजनीति उजागर होती हैं, वासंती के प्रश्न से पुरुष यश– अपयश पर प्रश्न उठता हैं। आत्रेयी की ज्ञान यात्रा नारी की असीमित बौद्धिकता को प्रकाशित करती हैं। अरुंधती, गंगा और पृथ्वी आपसी सहयोग की भावना से नारी के न्याय के लिए सहायक बनती हैं। भवभूति के नाटकों में स्त्री जीवन केवल करूणा की प्रतिमूर्ति नहीं, वे नाटक का नैतिक विवेक हैं। भवभूति विवाह, पवित्रता को ज्ञान, दया एवं न्याय के द्वारा पुनर्परिभाषित करते हैं, जो नारी जीवन की मर्यादा एवं स्वतंत्रता को पूर्णतः प्रभाषित करने में सफल होता हैं।

सन्दर्भ सूची

1. मिश्र आचार्य श्रीरामचन्द्र(2009), महावीरचरितम्– महाकवि भवभूति, अंक–4, श्लोक– 40, पृष्ठ– 176, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
2. मिश्र आचार्य श्रीरामचन्द्र(2009), महावीरचरितम्– महाकवि भवभूति, अंक–4, श्लोक–47, पृष्ठ–181, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
3. राय डॉ गंगासागर (2017), मालतीमाधवम्– महाकवि भवभूति, अंक–2,पृष्ठ– 91, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी,।
4. राय डॉ गंगासागर (2017), मालतीमाधवम्– महाकवि भवभूति,अंक–2, श्लोक–2, पृष्ठ– 82, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी ।

Online ISSN: 3048-667X
CODEN (CAS, USA): JRLAB4
Impact Factor: 3.66

5. राय डॉ गंगासागर (2017), मालतीमाधवम्– महाकवि भवभूति,अंक–2, श्लोक–8,पृष्ठ–93, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।
6. त्रिपाठी डॉ रमाकान्त(2016) ,उत्तररामचरितम्– महाकवि भवभूति, अंक–1, श्लोक–12 पृष्ठ–24,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
7. त्रिपाठी डॉ रमाकान्त(2016) ,उत्तररामचरितम्– महाकवि भवभूति, अंक–1, श्लोक–13, पृष्ठ–26,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी।
8. त्रिपाठी डॉ रमाकान्त(2016) ,उत्तररामचरितम्– महाकवि भवभूति, अंक–3, श्लोक–27, पृष्ठ–189, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
9. त्रिपाठी डॉ रमाकान्त(2016) ,उत्तररामचरितम्– महाकवि भवभूति, अंक–2, श्लोक–3, पृष्ठ–84,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।